''संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म चिन्तन'' -
(भारवि एवं माघ के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन)
''संस्कृतमहाकाव्ययोः राजधर्मचिन्तनम्'' -
(भारविमाघयोः सन्दर्भे तुलनात्मकमध्ययनम्)

RAJDHARMA THOUGHT IN SANSKRIT EPICS (A COMPARATIVE STUDY WITH REFERENCE TO BHARVI AND MAGH)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को कला संकाय में पीएच.डी. (संस्कृत) की
उपाधि हेतु प्रस्तूयमान

संशोधित
शोध-प्रस्ताव की रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. श्रीमती बीना चौधरी

विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।

शोधार्थी

प्रीति शर्मा

विश्वविद्यालय

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र - २०१४

APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) PREETI SHARMA

   (In Hindi) प्रीति शर्मा

2. Title of the Research Work :

   (In English) RAJDHRMA THOUGHT IN SANSKRIT EPICS (A COMPARATIVE STUDY WITH REFERENCE TO BHARVI AND MAGH.)

   (In Hindi) "संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म-चिन्तन" - (भारवि एवं माघ के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन)

3. Location

   a. Institution/Department where the work is to be done

   b. Geographical area of Investigation, if any.

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

Preeti Sharma
12/5/15

Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

12.5.15

Name and Signature of supervisor with date & seal.

व्याख्याता.....................
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

....

....

....

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. Preeti Sharma on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have 05 (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is 04 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

12.5.15

Signature of the Supervisor with date

व्याख्याता राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. Preeti Sharma for research work if he/she is registered for Ph.D.

उप-प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

12.5.15

Signature of the Head, Department with date

व्याख्याता राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX – IV

Format for outline of Proposed Research work

(To be supplied in six copies)

1.	**Name of Scholar**	:	PREETI SHARMA प्रीति शर्मा
2.	**Title of Research work**	:	RAJDHARMA THOUGHT IN SANSKRIT EPICS (A COMPARATIVE STUDY WITH REFERENCE TO BHARVI AND MAGH) ''संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म चिन्तन'' – (भारवि एवं माघ के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन) ''संस्कृतमहाकाव्ययोः राजधर्मचिन्तनम्'' – (भारविमाघयोः सन्दर्भे तुलनात्मकमध्ययनम्)
3.	**Location**	:	
	(a) **Institution/Department where the work is to be done**	:	Sanskrit Department Government College, Ajmer
	(b) **Geographical area of investigation, if any**		________
4.	**Importance of Proposed investigation**	:	06
5.	**Review of work already done on the subject of Proposed Research study**	:	08
6.	**Research Gaps identified in the Proposed field of investigation**	:	13
7.	**Objectives**	:	14
8.	**Major Hypothesis, if any**	:	15
9.	**Materials and Methods/ Research Methodology**	:	16
10.	**Chapter wise details of Proposed Research**	:	17
11.	**Bibliography**	:	19

Outline Approved –

[signature]

Name and signature of the Supervisor with date and seal

व्याख्याता..........
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Preeti Sharma
12/5/15

Signature of the candidate with date

APPENDIX – VI

Certificate By Supervisor

DR. BEENA CHAUDHARY

H.O.D. Sanskrit

Govt. College, Ajmer

Certified that : Date: 12-5-15

(1) I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. **PREETI SHARMA** on the above subject if he/she is registered for Ph.D.

(2) To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any university.

(3) The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.

(4) The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography etc. submitted by the candidate.

(5) Necessary facilities are available in the Deptt. for the above research work (certified from Principal/Head University Deptt. with regard to facilities available is enclosed).

(6) I have **05** research candidate registered under my supervision and serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is **04** (give the serial number).

(7) The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University).

12.5.15

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. **PREETI SHARMA** for research work if he/she/registered for Ph.D.

Signature of Principal
Director of the
Institution with date.

12.5.15

Signature of the
Head of the
Department with date.

APPENDIX – IV

Format for Outline of Proposed Research Work

(To be supplied in 6 copies)

1. **Name of Scholar** **(In English)** : PREETI SHARMA

   (In Hindi) : प्रीति शर्मा

2. **Title of the research work** :

   (In English) : RAJDHARMA THOUGHT IN SANSKRIT EPICS (A COMPARATIVE STUDY WITH REFERENCE TO BHARVI AND MAGH)

   (In Hindi) : "संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म चिन्तन" - (भारवि एवं माघ के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन)

   (In Sanskrit) : "संस्कृतमहाकाव्ययोः राजधर्मचिन्तनम्" - (भारविमाघयोः सन्दर्भे तुलनात्मकमध्ययनम्)

3. **Location**

   (a) **Institution/Department where the work is to be done** : संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

4. **प्रस्तावित अन्वेषण का महत्त्व :-**

(Importance of Proposed Investigation)

संस्कृत साहित्य-जगत में महाकवि माघ तथा भारवि का उत्कृष्ट स्थान रहा है। इसी कारण माघ रचित महाकाव्य ''शिशुपालवधम्'' तथा भारवि रचित ''किरातार्जुनीयम्'' को संस्कृत साहित्य की बृहत्त्रयी में विशिष्ट स्थान मिला है। इन महाकाव्यों का कथानक महाभारत से लिया गया है। ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में श्रीकृष्ण, बलराम तथा उद्धव जी के राजनैतिक एवं नैतिक सिद्धान्तों और मन्त्रणाओं का विशेष उल्लेख है।

''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य में भी युधिष्ठरादि पञ्च पाण्डव सहित द्रोपदी का द्वैतवन में वनवास अवधि के मध्य राजनैतिक मन्त्रणाओं का विशेष उल्लेख है।

महाकवि भारवि तथा माघ द्वारा रचित इन महाकाव्यों में राजधर्म के विभिन्न अंगों का उल्लेख मिलता है। भारवि तथा माघ ने विभिन्न मन्त्रणाओं द्वारा राजधर्म की महीन से महीन विशेषताओं का उल्लेख किया है। साथ ही उनके अर्थगाम्भीर्य को पुष्ट किया है। जैसे शत्रु के विषय में कहा गया है कि शत्रु की बिल्कुल भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि बढ़ते हुए रोग तथा शत्रु को राजनीतिज्ञों के समान कहा है।

यथा – ''**उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता।**

समौ हि शिष्टैराम्नातौ वत्स्र्यन्तावामयः स च॥१०॥'' २/१० शि.व.

''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य में पराक्रमी राजा के विषय में कहा गया है कि –

पराक्रमहीन मनुष्य को विपत्तियाँ पराभूत कर देती हैं, और वह राज्यलक्ष्मी को प्राप्त नहीं कर पाता, अतः राजा को पराक्रमी होना चाहिए।

यथा – ''**विपदोऽभिभवन्त्य विक्रमं रहयत्यापदुपेत मायतिः।**

नियता लघुता निरायते रगरीयान्न पदं नृपश्रियः॥''

२/१४ ''**किरातार्जुनीयम्**''

आधुनिक युग में राजनीति बहुत अधिक दूषित हो गई है। नेता स्वयं समाज में क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, संकीर्णता फैला रहे हैं जिससे समाज संगठित होने की अपेक्षा वर्गों में विभाजित हो रहा है परिणामस्वरूप अखण्ड राष्ट्र की कल्पना भी बिखर रही है।

अतः वर्तमान में ऐसे राजधर्म की आवश्यकता अनुभूत की जा रही है जिससे शासन-व्यवस्था सुदृढ़ हो सके। ''किरातार्जुनीयम्'' तथा ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में वर्णित राजधर्म का चिन्तन इस समस्या को सुलझाने में सहायक हो सकता है। इसीलिए इन महाकाव्यों में महाकवि भारवि तथा माघ द्वारा बताए गए राजधर्म के अंगों का अध्ययन कर, उनका वर्तमान में महत्त्व तथा प्रासंगिकता दर्शाना आवश्यक है। जिससे समाज में क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, सामाजिक विद्वेष, वोटों की राजनीति आदि स्वार्थ का विष न घोल सके। अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समरसता बनी रहे।

५. अनुसन्धान कार्य का पुनरावलोकन -

(Review of work already done on the subject of proposed Research study)

संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में ''राजधर्म'' विषय पर कई शोध-कार्य हो चुके हैं। चूंकि भारतीय धर्म, सभ्यता, समाज तथा संस्कृति के साथ राजनीति का अटूट सम्बन्ध है। अत: राजनीति का प्रभाव समाज तथा संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ता है।

''किरातार्जुनीयम्'' तथा ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्यों का कथानक 'महाभारत' से लिया गया है। महाकवि भारवि तथा माघ रचित इस महाकाव्य में राजधर्म के अंग उत्तम एवं अनुकरणीय हैं। वर्त्तमान में हम राजधर्म के मूल मापदण्ड़ों को विस्मृत कर रहे हैं। अत: महाकवि भारवि तथा माघ द्वारा बताए गए राजधर्म के अंगों की वर्त्तमान प्रासंगिकता देखना अत्यावश्यक है।

अभी तक संस्कृत साहित्य में ''राजधर्म'' विषय पर कई शोधकार्य हो चुके हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

१. ''मुद्राराक्षस में राजनैतिक चिन्तन''

लेखक - महेन्द्र कुमार राठौड़

निर्देशक - श्री बद्रीप्रसाद पंचोली

सन् - २००७

महर्षि दयानन्द सरस्वती वि.वि., अजमेर

२. "रघुवंशे राजधर्मा : तेषामद्यतन समाजोपयोगितायाः विमर्शश्च"

लेखक - मंजुनाथ भट्ट

निर्देशक - डॉ. सी. रंगनाथन

सन् - २०१२

राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि. तिरुपति

३. "रामायण तथा महाभारत में वर्णित राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन"

लेखक - श्री अशोक कुमार शर्मा

निर्देशक - डॉ. चन्दनलाल पाराशर

श्री भीमराव अम्बेडकर वि.वि., (आगरा)

४. "महाभारतस्य शान्त्यानुशासनिक पर्वणोः सुभाषितानां राजनैतिकं सामाजिकञ्चानुशीलनम्"

लेखक - तेगंलापल्लि महेन्द्र

निर्देशक - डॉ. सी. रंगनाथन

सन् - २०१०

राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि., तिरुपति

५. "कौटिल्यार्थशास्त्रपञ्चतन्त्रयोः राजनीतितत्त्वानां समीक्षणात्मक मध्ययनम्।"

लेखक - निलेश पाण्ड्या

निर्देशक - डॉ. सुशान्त कुमार राज

सन् - २७-१२-२०११

वि.वि. - गुरुवयूर कैम्पस, पुरानात्रुकर, थ्रिसुर।

६. “अर्थशास्त्रदृष्ट्या किरातार्जुनीयशिशुपालवधमहाकाव्ययो: विमर्शात्मकमध्ययनम्।”

लेखक – पी. सुभद्रा

निर्देशक – डॉ. सीएच. पी. सत्यनारायणा

सन् – २००३

राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि. तिरुपति

७. “चाणक्य नीति सूत्राणाम् सामाजिक प्रासांगिकता एकमध्ययनम्।”

लेखक – राघवेन्द्र भट

निर्देशक – डॉ. के. राजगोपालन

सन् – २००९

राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि., तिरुपति

८. “प्राचीनार्वाचीनराजशास्त्रालोके महाभारतीयशान्तिपर्वण: समीक्षात्मकमध्ययनम्”

लेखक – श्री हेतराम कछवाहा

निर्देशक – डॉ. कैलाशपति त्रिपाठी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि., वाराणसी।

९. “महाकविर्माघ :” (रेडियोरूपक)

स्वरमंगला – १९८१

७ वर्ष / द्वितीय अंक

डॉ. प्रभाकर शास्त्री द्वारा प्रकाशित

१०. ''संस्कृत के प्रमुख महाकाव्यों में राजनीति एक अध्ययन।''

लेखक – श्रीमती नलिनी उपाध्याय

निर्देशक – डॉ. रघुवीर शास्त्री

डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा।

११. ''माघेऽलंकार विमर्श''

कल्याण भारती

अध्यक्ष – संस्कृत विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय।

प्राक्कथन – प्रो. रसिक बिहारी जोशी

अध्यक्ष – संस्कृत विभाग, दिल्ली वि.वि.,

उषा पब्लिशिंग दाऊस, जोधपुर।

१२. ''वैदिक राजधर्म एवं महर्षि दयानन्द''

लेखक – रजनीश उपाध्याय

निर्देशक – डॉ. बाबूराम त्रिपाठी

सन् – २०००

महर्षि दयानन्द सरस्वती वि.वि., अजमेर।

१३. ''आचार्य चाणक्य रचित चाणक्य नीति दर्पण''

लेखिक – अनिता चौबे

सन् – २००७

म.द.स.वि.वि., अजमेर।

१४. ''भारवि माघ व श्रीहर्ष के महाकाव्यों में अभिव्यञ्जित जीवन-मूल्य।''

लेखिक - अल्पना भट्टनागर

निर्देशक - डॉ. कुञ्ज बिहारी पाण्डेय

सन् - १९९७

म.द.स.वि.वि., अजमेर

६. प्रस्तावित गवेषणा के क्षेत्र में निर्देशित शोध अन्तराल –

(Research Gaps identified in the proposed field of investigation)

संस्कृत साहित्य में भारवि रचित ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य तथा माघ रचित ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य विषय पर अब तक हुए शोध–कार्यों का निरीक्षण करके यह ज्ञात हुआ है कि इन विभिन्न शोधों में अर्थ–शास्त्र, जीवन–मूल्य, अलंकार विमर्श, जीवन एवं कृतित्व, वक्रोक्ति अलंकार, अन्य कवियों से तुलनात्मक राजनैतिक अध्ययन आदि विषयों पर शोधकार्य किए गए हैं।

परन्तु अभी तक ''संस्कृत महाकाव्य में राजधर्म चिन्तन'' (भारवि एवं माघ के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन) विषय की वर्तमान प्रासंगिकता विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। वर्त्तमान में ऐसे राजधर्म की आवश्यकता अनुभूत की जा रही है, जिससे शासन की व्यवस्था सुदृढ़ हो सके। ''किरातार्जुनीयम्'' तथा ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में वर्णित राजधर्म पर चिन्तन इस समस्या को सुलझाने में सहायक हो सकता है।

७. **उद्देश्य :-**

(Objectives) :-

१. "किरातार्जुनीयम्" महाकाव्य एवं "शिशुपालवधम्" महाकाव्य में महाकवि भारवि तथा माघ द्वारा बताए गए राज्य के सफल शासन से दिशानिर्देश लेकर वर्तमान राजनीति में सुधार लाना।

२. वर्तमान राष्ट्रनायक उक्त महाकाव्य में उल्लिखित राजाओं के गुणों को धारण करें।

३. आदर्श राज्य शासन के विभिन्न अंगों के अनुरूप शासन कर वर्तमानकालीन राष्ट्र-उन्नति लाना।

४. राजनीति में नकारात्मक पक्षों को छोड़कर सकारात्मक पक्षों को अपनाना।

५. राजशास्त्र सम्बन्धी सकारात्मक सिद्धान्तों को वर्त्तमान में लागू करना।

६. राजधर्म सम्बन्धी विचारों का समालोचनात्मक परीक्षण करना।

७. "किरातार्जुनीयम्" तथा "शिशुपालवधम्" महाकाव्य में उल्लिखित राज्य के सात अंगों (स्वामी-अमात्य-सुहृत-कोश-राष्ट्र-दुर्ग-बल) की वर्त्तमान राजनीति में तुलना करना।

८. राज्य के सप्तांगों की वर्त्तमान प्रासंगिकता बताना।

८. बृहत् परिकल्पना यदि हो :-

(Majer Hypothesis, if any) :-

१. ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य एवं ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में राजधर्म विस्तृत रूप में वर्णित है।

२. यद्यपि ''किरातार्जुनीयम्'' तथा ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्यों में वर्णित राजधर्म तत्कालीन कालखण्ड में श्रेष्ठ राजनैतिक मूल्यों, अभिप्रेरणा एवं मार्गदर्शन से सम्बन्धित है, किन्तु ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य एवं ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में वर्णित राजधर्म वर्तमानकालीन परिस्थितियों, सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं तथा समग्र आधुनिक परिदृश्य में उतना ही प्रासंगिक है, जितना तत्कालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में था।

९. शोध सामग्री तथा शोध विधि :-

(Materials and Methods/Research Methodology) :-

शोध विधि के लिए सामग्री के संकलन और सम्पादन का कार्य प्रारम्भ करने के लिए निम्नांकित प्रविधि प्रयोग में ली जाएगी।

१. प्रारम्भिक विवरण, द्वितीय स्तर पर प्रकाशित आँकड़ें, जो पूर्व में शोध कर चुके हैं, उनके ग्रन्थों का अनुशीलन कर नवीन तथ्यों का चयन एवं संग्रहण करना।

२. शोध कार्य के लिए अनुमानित कार्य अवधि – शोध कार्य २ वर्ष अर्थात् २४ माह की अवधि में शोध-विधि तथा प्रविधियों सहित पूर्ण होने की आशा की जाती है। उक्त शोध का अवधिवार नियोजन इस प्रकार है – (१) उक्त गवेषण की न्यूनतम अवधि = १८ माह, (२) समायोजन एवं विश्लेषण = ३ माह, संशोधन-टंकण-लेखन आदि कार्य = ३ माह अनुमानित हैं।

३. शोध कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएँ – इस शोध कार्य के निष्पादन में मैं जयपुर में स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय, संस्कृत वि.वि. जयपुर, महर्षि दयानन्द सरस्वती वि.वि. का पुस्तकालय, अजमेर स्थित परोपकारिणी सभा का वैदिक पुस्तकालय, डी.ए.वी. महाविद्यालय अजमेर; राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर स्थित पुस्तकालय आदि से समय-समय पर आवश्यकतानुसार विभिन्न शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर सहयोग लूँगी।

४. शोधकर्ता के शोध-संस्थान महाविद्यालय में पुस्तकालय की प्राप्त सुविधा – राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में स्थित पुस्तकालय में दुर्लभ ग्रन्थों की अमूल्य निधि है। वहाँ विभिन्न शब्द-कोष, विश्व-कोष, पत्र-पत्रिकाएँ तथा विभिन्न विषयों के उच्च-अध्ययन सम्बन्धी शोध-पुस्तकें संग्रहित है।

१०.प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरण

(Chapterwise details of Proposed Research)

विषय सूची

विवरण

प्राक्कथन

कृतज्ञता ज्ञापन

संकेताक्षर-सूची

''संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म चिन्तन'' –
(भारवि एवं माघ के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन)
''संस्कृतमहाकाव्ययोः राजधर्मचिन्तनम्'' –
(भारविमाघयोः सन्दर्भे तुलनात्मकमध्ययनम्)
RAJDHARMA THOUGHT IN SANSKRIT EPICS (A COMPARATIVE STUDY WITH REFERENCE TO BHARVI AND MAGH)

प्रथम अध्याय : **महाकवि भारवि एवं माघ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

* महाकवि भारवि का जीवन वृत्त एवं कृतित्व
* महाकवि माघ का जीवन वृत्त एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : **महाकाव्य परम्परा एवं भारवि-माघ रचित महाकाव्यों का वैशिष्ट्य**

* महाकाव्य परम्परा
* महाकाव्यों में ''किरातार्जुनीयम्'' एवं ''शिशुपालवधम्'' का वैशिष्ट्य

तृतीय अध्याय : **''शिशुपालवधम्'' में उल्लिखित राजधर्म**

* १. स्वामी, २. अमात्य, ३. जनपद, ४. दुर्ग, ५. कोश, ६. दण्ड, ७. मित्र।

चतुर्थ अध्याय : **''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य में उल्लिखित राजधर्म**

* १. स्वामी, २. अमात्य, ३. जनपद, ४. दुर्ग, ५. कोश, ६. दण्ड, ७. मित्र।

पंचम अध्याय : **''किरातार्जुनीयम्'' एवं ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्यों में वर्णित राजधर्म का तुलनात्मक अध्ययन**

षष्ठम अध्याय : **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य एवं ''शिशुपालवधम्'' महाकाव्य में वर्णित राजधर्म की प्रासंगिकता**

उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Outline synopsis 12.5.15
Approved

व्याख्याता..................
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the
candidate with date
12/5/15

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(Biloliography)

क्र. सं.	रचनाकार	ग्रन्थ	वर्ष	प्रकाशन
१.	रचनाकार – महाकवि भारवि	"किरातार्जुनीयम्"	1993	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
१.	रचनाकार – महाकवि माघ टीकाकार – मल्लिनाथ महोदय (सर्वंकषा) व्याख्याकार – मुसलगाँवकर, केशवराव	"शिशुपालवधम्"	वि.स. २०६९	चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी
२.	रचनाकार – महाकवि माघ टीकाकार – मल्लिनाथ महोदय व्याख्याकार – शास्त्री, पं. हरगोविन्द	"शिशुपालवधम्"	२०१३	चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
३.	साहू, रामदेव	"शिशुपालवधम्"	२००९	हंसा प्रकाशन, जयपुर
४.	सरस्वती जगदीश्वरानन्द, स्वामी	"शुक्रनीतिसार"	१९८३	कपूर धर्मार्थ ट्रस्ट, बहालगढ़–सोनीपत (हरियाणा)
५.	पाण्डेय, श्यामलाल	"शुक्र की राजनीति"	२००९	प्रेम पब्लिकेशन, लखनऊ
६.	भट्ट, गंगाधर	"संस्कृत काव्य में नीति तत्त्व"	१९७१	बाफना प्रकाशन, जयपुर
७.	भट्ट, डॉ. गंगाधर, दीक्षित, डॉ. विनोद	"नीतिशतकम्"	१९९१	अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर
८.	त्रिपाठी, डॉ. आर.एन.	"नीतिशतकम्"		आदर्शप्रकाशन, चौड़ा रासता, जयपुर
९.	पाण्डेय, जनार्दन शास्त्री	"मनुस्मृति"	१९८४	मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली–वाराणसी
१०.	गैरोला वाचस्पति	"संस्कृत साहित्य का इतिहास"	१९८५	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
११.	द्विवेदी, कपिल देव	"संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास"	१९८२	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
१२.	चैतन्य, श्रीकृष्ण	"संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास"	१९६५	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
१३.	त्रिपाठी, डॉ. बाबूराम	"श्रीमद्भगवतगीता"	१९९३	महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

१४.	भास्कर, श्रीधर	"संस्कृत वाङ्मय का भाग-१"	१९९८	भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता
१५.	भास्कर, श्रीधर	"संस्कृत वाङ्मय का भाग-२"	१९९८	भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता
१६.	सीताराम, डॉ. चन्द्रभानु	"साहित्य शास्त्र"	१९६३	शारदा प्रकाशन, नदिड़
१७.	कृष्णदास, आचार्य पण्डित	"चाणक्यं नीतिदर्पण: अर्थात् राजनीति समुच्चय:"	वि.सं. २०४३	अकादमी, वाराणसी
१८.	कमल, एम.पी.	"विदुर नीति"	२०००	राजा पॉकेट बुक्स, दिल्ली
१९.	उपाध्याय, बलदेव	"संस्कृत साहित्य का इतिहास"	१९६५	रविन्द्रपुरी
२०.	सिंह, डॉ. राजकिशोर	"संस्कृत का सुबोध इतिहास"	१९६५	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
२१.	शर्मा, विश्वमित्र	"चाणक्य नीति"	१९९८	मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली
२२.	स्वामी दयानन्द सरस्वती रचित	"सत्यार्थ प्रकाश"	वि.स. २०२९	स्वामीदयानन्द सरस्वती प्रकाशन, रामलाकपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (हरियाणा)
२३.	वेद वाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत	"वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त खण्ड १-३"		मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
२४.	वेद वाचस्पति, आचार्य प्रियव्रत	"वैदिक राजनीति में राज्य की भूमिका"		मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
२५.	पं. चतुर्वेदी, ज्वाला प्रसाद	"विदुर नीति"	१९९६	रणधीर प्रकाश हरिद्वार
२६.	ज्ञानी, शिवदत्त	"वेदकालीन समाज"	१९६७	चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी
२७.	वर्मा, पी.वी.	"वैदिक राजनीति शास्त्र"	१९७५	बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना-३
२८.	भूमानन्द, सरस्वती	"वैदिकी लोक व्यवस्था"	१९३६	वैदिक धर्म प्रचारक संघ आर्य समाज, दिल्ली

२९.	गैरोला, वाचस्पति	''वैदिक साहित्य और संस्कृति''	१९८९	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
३०.	उपाध्याय, बलदेव	''वैदिक साहित्य और संस्कृति''	१९८०	शारदा संस्थान, वाराणसी
३१.	टीकाकार आचार्य, प्रोफेसर चन्द्र प्रकाश	''हितोपदेश''	१९९०	संस्कृति संस्थान, बरेली
३२.	जायसवाल, काशीप्रसाद	''हिन्दु राज्यतन्त्र खण्ड १-२''	वि.स. २०३४	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
३३.	वाजपेई, अम्बिका प्रसाद	''हिन्दु राज्य शास्त्र''	१९४६	हिन्दी साहित्य सम्मेलन
३४.	गुप्त, रामेश्वर प्रसाद	''वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्त्व''	१९९५	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली-७
३५.	वाल्मीकि प्रणीत	''वाल्मीकि रामायण खण्ड १-२''	वि.सं. २०२४	गीताप्रेस, गोरखपुर
३६.	चण्डेश्वर विरचित, व्याख्याकार गैरोला, वाचस्पति एवं झा, तरिणीश	''राजनीति रत्नाकर''	१९७०	चौखम्बा संस्कृत सिरीज ऑफिस, वाराणसी
३७.	सम्पादक पं. शंकर	''रघुवंश''	१८९७	गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, दिल्ली
३८.	अनु. पाण्डेय, पं. रामनारायण दत्त शास्त्री	''महाभारत खण्ड १-६''	वि.सं. २०१६	गीताप्रेस, गोरखपुर
३९.	पाण्डेय, श्यामलाल शास्त्र प्रणेता	''भारतीय समाज''	१९६४	हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ
४०.	वाजपेई, राघवेन्द्र	''बार्हस्पत्य राजव्यवस्था''	१९६६	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
४१.	वेदालंकार, हरिदत्त	''प्राचीन भारत की शासन संस्थाएँ और राजनीतिक विचार''		सरस्वती सदन, नई दिल्ली
४२.	भर्तृहरि, वयाख्याकार द्विवेदी, डॉ. सत्यनारायण, मिश्रा, डॉ. सुमन	''नीतिशतकम्''	१९९०	सुभारती प्रकाशन, कानपुर
४३.	सोमदेव सूरि विरचित, अनु. गुप्ता, डॉ. सुधीर कुमार	''नीतिवाक्यामृतम्''	१९८७	प्राकृत भारतीय अकादमी, जयपुर
४४.	दीक्षित, प्रेम कुमारी	''प्राचीन भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध''	१९७७	उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ
४५.	उपाध्याय, आचार्य बलदेव	''संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास''	१९९९	उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

४६.	मित्तल, डॉ. सन्तोष	''शैक्षिक तकनीकी''	१९९७	राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
४७.	शर्मा, डॉ. राघवेन्द्र प्रसाद	''संस्कृत वाङ्मय''	२०००	एच.जी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली
४८.	गैरोला, वाचस्पति (व्याख्याकार)	''कोटिल्य अर्थशास्त्र''		चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी
४९.	शर्मा, डॉ. केदार	''प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में राजधर्म का स्वरूप''	२००६	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
५०.	प्रो. इन्द्र	''कोटिल्य अर्थशास्त्र''	१९७६	राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली
५१.	शास्त्री, डॉ. शंकर लाल	''शिशुपालवध महाकाव्य में माघ का जीवन दर्शन''	२०१०	वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर
५३.	भटनागर, अल्पना	''भारवि माघ व श्री हर्ष के महाकाव्यों में अभिव्यञ्जित जीवन मूल्य''	१९९७	
५४.	शास्त्री, मनोहर लाल	''संस्कृत वाङ्मय में समाज और राष्ट्र''	२०१३	राज. संस्कृत अकादमी, जयपुर

Outline Approved

Name and Signature
of the Supervisor with date and seal.

12.5.15

व्याख्याता......................
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the
candidate with date

12/5/15

पत्र-पत्रिकाएँ

परोपकारी	:	परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर
लोक संस्कृतम्	:	संस्कृत कार्यालय, श्री अरविन्दाश्रम, पुदुच्चेरी
स्वरमंगला	:	संस्कृत अकादमी, जयपुर
विश्वसंस्कृतम्	:	विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान, होशियारपुर, पंजाब
भारती	:	कलानाथ शास्त्री
कल्याण पत्रिका (मा.)	:	गीता प्रेस, गोरखपुर
पाथेय (मा.)	:	भारती भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर
सम्भाषण संदेश (मा.)	:	अक्षरम्, ८ क्रोस, II-फेस, गिरीनगर, बैंगलूर (कर्नाटक)
राज. पत्रिका (दै.प.)	:	S.P. परबतपुरा, रीको औद्योगिक क्षेत्र, अजमेर
दैनिक भास्कर (दै.प.)	:	१०, जवाहरलाल नेहरू, मार्ग, जयपुर

12.5.15

व्याख्याता.................
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

12/5/15